(1)

Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
Sub:- Auditing (Hons), paper IInd
SNSRKS COLLEGE, SAHARSA

B'com Part,: 1st

Sub:- Auditing (Hons)

Introduction

* Growth of Auditing *
(अंकेक्षण का विकास)

व्यवसाय के क्षेत्र में अंकेक्षण का प्रादुर्भाव सरकारी क्षेत्र से ही हुआ। आधुनिक व्यवसाय के विकास के साथ-साथ अंकेक्षण का रूप भी निखरता गया तथा इसका क्षेत्र व्यापक होता चला गया। इसके विकास के प्रथम चरण में यह रोकड़-प्राप्तियों एवं भुगतानों की जाँच करने तक ही सीमित था किन्तु वर्तमान में अंकेक्षण की क्रिया के अंतर्गत वित्तीय विवरणों की नियमानुकूलता एवं शुद्धता प्रमाणित करना भी शामिल किया जाता है। सुविधा के ख्याल से अंकेक्षण के विकास का अध्ययन निम्नांकित शीर्षकों के अंतर्गत किया जा सकता है:

1. सन 1494 से 1914 तक :- संसार में व्यापार के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई और जिसके परिणामस्वरूप 1494 ई० में व्यवसायिक जगत में लेखांकन संबंधी महत्वपूर्ण आविष्कार हुए। सन 1914 में लेखांकन की दोहरे लेखे प्रणाली को जन्म दिया जिसका प्रचार व्यापारिक क्षेत्र में बहुत तीव्र गति से हुआ।

2. सन 1914 से 1932 तक :- भारत में अंकेक्षक का इतिहास 1914 से प्रारंभ हुआ। यह कानून भारत में (भारतीय कं- अधिनियम 1913 के अंतर्गत कंपनियों के लेखा-पुस्तकों का अंकेक्षण कराना) अनिवार्य कर दिया (1 अप्रैल 1914 से)

3. सन 1932 से 1949 तक :- Auditor's Certificate rules बनाये गये तथा उसके अनुसार Registered Accountant की उपाधि निर्गत की जाने लगी।

4. सन 1949 में चार्टर्ड एकाउंटेंट्स अधिनियम 1949 :- यह

अधिनियम बनाया गया। जो 1 July, 1949 से लागू हुआ।

5. सन् 1956 से 1960 तक :- अंकेक्षण के विकास के महत्व के संबंध में 1956 का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि पुराना कंपनी अधिनियम, 1913 को समाप्त कर 1 April, 1956 को एक विस्तृत कंपनी अधिनियम बनाया गया।

6. सन् 1960 के बाद :- कंपनी अधिनियम 1956 में भी कई संशोधन किये गये है। यही कारण है कि अंकेक्षण के दृष्टिकोण से यह वर्ष अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

Need of Auditing
(अंकेक्षण की आवश्यकता)

अंकेक्षण के विकास को प्रभावित करने वाले अनेक आर्थिक, सामाजिक एवं औद्योगिक तत्व है। इनमें से कुछ प्रमुख तत्व निम्नलिखित है :-

i) औद्योगिक क्रान्ति (Industrial Revolution)
ii) व्यवसाय के सामाजिक उद्देश्य (Social objects of Business)
iii) स्वामित्व का प्रबन्ध से अलगाव (Divorce between Ownership and Management)
iv) न्यायालयों के निर्णय (Decisions of Court of law)
v) राज्य द्वारा नियमन (Regulation by the state)
vi) पेशे का नियमन (Regulation of Profession)
vii) अन्तर्राष्ट्रीय लेखांकन मानकों की स्थापना (Establishment of International Accounting standard)
viii) यंत्रीकृत लेखांकन का प्रभाव (Effect of Mechanised Accounting)

The end

Dr. Honey Singh
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
Sub:-Auditing (Hons) Paper-II
SNSRKS College, SAHARSA